गौड़ीय मठ एवं मिशन के 'शताब्दी समारोह' के उपलक्ष्य में महामहिम राज्यपाल, श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन

(स्थान–रवीन्द्र भवन, दिनांक 18.09.2016, समय– 4:00 बजे अप॰)

गौड़ीय मठ एवं मिशन के 'शताब्दी समारोह' के उपलक्ष्य में आयोजित 'सनातन धर्म सम्मेलन' में प्रमुख रूप से उपस्थित पटना उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री सुधीर सिंह जी, लोकायुक्त न्यायमूर्ति मिहिर कुमार झा जी, गौड़ीय मिशन के सभापति संत परिब्राजक गोस्वामी महाराज जी, सचिव संन्यासी महाराज जी, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के निदेशक डॉ॰ ओमप्रकाश भारती जी, गौड़ीय मिशन से जुड़े सभी सन्त एवं भक्त–जन, समारोह में उपस्थित बुद्धिजीवीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

गौड़ीय मिशन और गौड़ीय मठ के त्रिवर्षीय 'शताब्दी समारोह' के उपलक्ष्य में आयोजित आज के इस दिव्य समारोह में उपस्थित होना मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। आप सभी अवगत है कि गौड़ीय मिशन–मठ की स्थापना सन् 1916 ई॰ में गोस्वामी प्रभुपाद जी ने की थी, जबकि पटना के गौड़ीय मिशन की स्थापना वर्ष 1933 ई॰ में हुई थी। आज का यह आयोजन गौड़ीय मठ के 'शताब्दी समारोह' की श्रृंखला का दूसरा आयोजन है।

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की अस्मिता व पहचान, ज्ञान, भक्ति और अध्यात्मिकता की गौरवशाली परम्परा व समृद्ध विरासत से जुड़ी रही है। भारतवर्ष की पहचान पूरे विश्व में यहाँ की भौतिक और आर्थिक समृद्धि को लेकर कभी नहीं रही।

भारत अनेकानेक दर्शनों और आध्यात्मिक चिन्तनों का संगम–स्थल रहा है। ज्ञान और भक्ति की विभिन्न शाखाएँ–प्रशाखाएँ यहाँ रही हैं। किन्तु सबका लक्ष्य आत्मिक उन्नयन ही रहा है। अपने समान सबको समझने की वैश्विक और सर्वसहिष्णु जीवन–दृष्टि ही हमारे राष्ट्रीय चिन्तन का मूलाधार रही है। हम सत्य को भी उसके व्यापक अर्थ में ग्रहण करनेवाले लोग हैं। कोई परमात्मा में विश्वास करता है, तो कोई प्रकृति में। किन्तु आत्म और अनात्म–दोनों तरह की विचार–धाराओं से जुड़े लोग मानवीय संवेदना में निश्चित रूप से आस्था रखते हैं। भारतवर्ष मूलतः आस्थावादी राष्ट्र है, आशावादी राष्ट्र है। इसीलिए, यह देश प्रेम में विश्वास करता है, भक्ति में विश्वास करता है, समता में विश्वास करता है, समरसता में विश्वास करता है और सह–अस्तित्व में विश्वास करता है। यह देश पूरी दुनिया को एक परिवार मानता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा केवल हमारा सैद्धान्तिक विचार नहीं, बल्कि हमारे रग–रग में घुली हमारी अमोघ जीवन–शक्ति है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया'– सभी सुखी रहें, सभी स्वस्थ और निरापद रहें, सभी सुप्रसन्न रहें– हमारी यह मंगलेच्छा हमारी संस्कृति का अविभाज्य उपादान है।

देवियों व सज्जनों, आज जिस गौड़ीय मिशन के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित पावन महोत्सव में हम एकत्रित हुए हैं, उस गौड़ीय संप्रदाय के प्रवर्त्तक परम पूज्य चैतन्य महाप्रभु थे। चैतन्य महाप्रभु के भक्ति–सिद्धांत और दर्शन के मर्मज्ञ–विद्वान मंचस्थ हैं और बहुतेरे इस सभागार में उपस्थित भी हैं। चैतन्य महाप्रभु भगवान श्री कृष्ण के अनन्य उपासक थे। वे श्री कृष्ण को 'ब्रजेन्द्र कुमार' मानते

थे। साथ ही उन्होंने यह भी माना कि श्रीकृष्ण ब्रज में गोलोक की लीलाओं सहित विहार करते हैं। उनकी दृष्टि में श्री कृष्ण परम तत्व, पूर्ण ज्ञान तथा पूर्ण आनन्द–रूप हैं। श्री कृष्ण की अनन्य शक्तियाँ हैं, जिनमें एक शक्ति–'आह्लादिनी शक्ति' भी है। राधा आह्लादिनी शक्ति–रूपा हैं। 'चैतन्य चरितामृत' में राधा और कृष्ण के स्वरूप तथा इन शक्तियों का विस्तार से वर्णन मिलता है। गौड़ीय संप्रदाय का स्वरूप और दर्शन भी इसी से सम्बद्ध है और इसीलिए हम लोग चैतन्य महाप्रभु को भगवान श्री कृष्ण का अवतार भी मानते हैं। भगवान श्री कृष्ण ने समुचे विश्व को मार्ग–दर्शन प्रदान किया। इसीलिए, उन्हें 'आचार्यों का आचार्य' और 'गुरूओं का गुरू' कहा जाता है।

देवियों और सज्जनों, आज पूँजीवादी और भौतिकवादी व्यवस्था के कुचक्र में फँसकर हमारा आध्यात्मिक पतन हुआ है। हम निरन्तर तनाव और दुःख से ग्रस्त नजर आते हैं। संसार में जिन तीन तरह के संतापों की कल्पना की गई है– दैहिक, दैविक और भौतिक– यह वस्तुतः हमारी श्री कृष्ण से विमुखता का ही परिणाम है। श्री कृष्ण से विमुखता का मतलब है– परमात्म सत्ता से विमुखता। उस परमात्म से विमुखता, जो हमें प्रत्येक प्राणी से प्रेमपूर्वक जुड़े रखना सिखाती है, परमार्थ और त्याग को वास्तविक जीवन–धन बताती है, छोटे–बड़े, अमीर–गरीब और हर तरह के जातीय– साम्प्रदायिक विभेदों से ऊपर उठकर विश्वात्मा और विश्व–मैत्री में विश्वास और आस्था का संदेश देती है। चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रवर्त्तित 'गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय' और उसकी महान परम्परा के 'अचिंत्य–भेदा–भेद' आदि जिन दार्शनिक तत्वों का विश्लेषण 'वेदान्त–दर्शन' के आलोक में सन्तों ने प्रस्तुत

किया है, उन सबका सार यही है कि जीव–जीव में कोई भेद नहीं है और जीव तथा भगवान के बीच भी अभेदत्व है। समानता और समरसता की यही दृष्टि, जो 15वीं शताब्दी के अंतिम चरण में महान संत चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रवर्तित की गई थी, बाद में उसी का प्रभाव 19वीं शताब्दी के भारत के आधुनिक मनीषियों और चिन्तकों– श्री रामकृष्ण परमहंस, कविवर रवीन्द्रनाथ टैगौर, स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, जे॰ कृष्णमूर्ति, बालगंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी और बाबा साहब डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर आदि के भी विचारों में देखने को मिलता है। हमारा 'भारतीय संविधान', जिसके प्रमुख रचनाकार डॉ॰ अम्बेडकर जी थे, ने भारतीय संविधान की 'प्रस्तावना' को इस रूप में तैयार किया है कि वह हमारे समस्त जीवन–दर्शनों, चिन्तनों, ज्ञान–शाखाओं के निष्कर्षों, मर्यादाओं और आदर्शों का सार–रूप है। यह हमारे जीवन को परिचालित करनेवाला वह मूल–मंत्र है, जो हमारी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परम्परा से जुड़े रहते हुए, आधुनिक विश्व के साथ हमारे सामंजस्य का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

गौड़ीय वैष्णव संत और भक्त यह मानते हैं कि मानवीय संवेदना ईश्वरीय भक्ति का मूल तत्व है। गुजरात के संत कवि नरसिंह मेहता जी के पद की पंक्तियाँ हैं– ''वैष्णव जन ते तेणे कहिये पीर परायी जाड़े रे।''–अर्थात्, सच्चा वैष्णव वही है, जो दूसरे की पीड़ा को समझे। दूसरे के दुःख पर द्रवित हो। कष्ट की घड़ी में परोपकार करना जानता हो। हमारे भारतीय जीवन–पद्धति का यही मूल मंत्र है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गौड़ीय मिशन, कोलकाता द्वारा आयोजित 'शताब्दी समारोह' की श्रृंखला के प्रथम

आयोजन को संबोधित करते हुए 'भक्तों' के बारे में एक विशेष बात कही थी। उन्होंने कहा था कि ''सच्चे भक्त वही हैं, जो विभक्त नहीं हैं।'' अर्थात्, सच्चे भक्त सबके लिए एकरूप होते हैं, समदृष्टि वाले होते हैं। वस्तुतः सबके प्रति समानता और समत्व की दृष्टि बराबर हमारी भक्ति–साधना की मूल भावना रही है। गौड़ीय वैष्णव–भक्ति–साधना भी कृष्ण से इसी समतामूलक दृष्टि का वरदान और आशीष प्राप्त करती है। यही कारण है कि यह आज भी हमारी जीवन–दृष्टि का अविभिन्न अंग बनी हुई है।

मुझे बताया गया है कि गौड़ीय मिशन और दर्शन से जुड़े लोग एवं संस्थाएँ सामाजिक सेवा और कल्याण में भी कार्यरत हैं। इस धार्मिक संस्था की सामाजिक सेवा के प्रति यह अभिरूचि अत्यंत प्रशंसनीय है। आप बौद्धिक कार्यक्रमों के साथ–साथ, आपदा–प्रबंधन और जन–कल्याण के कार्यों में भी सक्रियता बनाये रखते हैं, यह सराहनीय है। आप युवाओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का ऐसा 'संग्रहालय' स्थापित करने जा रहे हैं, जो भारतीय संस्कृति और साधना का एक अनुपम आगार सिद्ध होगा– ऐसा मेरा विश्वास है। आपकी सौ वर्षों की उपलब्धिमय यात्रा पर मैं हृदय से अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। सभी साधु–संतों, मनीषियों–चिन्तकों को मेरा सादर नमन ! आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद !

जय हिन्द !!

***